DETAILED SYLLABUS

For

M.A. Final Political Science

BILASPUR UNIVERSITY
Bilaspur, Chhattisgarh
Old High Court Building, Near Gandhi Chowk, Bilaspur
Telephone: 07752-260294,077522-214203,07752-214204
Fax: 07752- 230077,07752-260294
Email: bilaspur.university2012@gmail.com

M.A. Final
Political Science

Compulsory Paper –

S.No.	Subject
1	Public Administration and Research Methodology
2	Indian Foreign Policy: Theory & Practice
3	International Law and Human Rights
4	International Organisation and Polities of Internalized Financial Institution

एम.ए. उत्तरार्ध

अनिवार्य प्रश्न पत्र –

क्र.	विषय
1.	लोक प्रशासन और शोध प्रविधि
2.	भारत की विदेश नीति, सिद्धांत और व्यवहार
3.	अंतर्राष्ट्रीय कानून और मानव अधिकार
4.	अंतर्राष्ट्रीय संगठन और वित्तीय संस्थाओं की राजनीति

एम. ए. अंतिम
वार्षिक, पेपर – I
लोक प्रशासन व शोध प्रविधि

पाठ्यक्रम औचित्य –

लोक प्रशासन –

यह प्रश्न पत्र लोक प्रशासन को व्यापक व्यवस्थित पर्यावरण मे समझने का प्रयास है जिससे इसके उपकरणों एवं कर्ताओं के मुख्य अंतःक्रियात्मक कारकों की पहचान की जा सके। तथा उन उपायों की समझ विकसित की जा सके जो उनकी क्रियात्मक दक्षता को प्रभावित करते हैं। एवं कार्यात्मक उपयोगिता को शक्ति प्रदान करते हैं। इसमें नौकरशाही के विकास तथा विकास की प्रक्रिया में इसके उल्लेखनीय योगदान को समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही विकासात्मक नौकरशाही के अध्ययन को भी ध्यान में रखा गया है।

शोध प्रविधि –

यह प्रश्न पत्र राजनीति विज्ञान में वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये इन्द्रियानुभाविक अनुसंधान की प्रक्रिया एवं पद्धतियों को रेखांकित करता है। सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पद्धतियों को राजनीति विज्ञान से संबंध करने का याह प्रयास है। उससे विभिन्न पद्धतियों एवं विचारों को आलोचना को भी सम्मिलित किया गया है।

एम. ए. अंतिम
वार्षिक, पेपर – I
लोक प्रशासन व शोध प्रविधि

पाठ्यक्रम औचित्य –

लोक प्रशासन –

यह प्रश्न पत्र लोक प्रशासन को व्यापक व्यवस्थित पर्यावरण मे समझने का प्रयास है जिससे इसके उपकरणों एवं कर्ताओं के मुख्य अंतःक्रियात्मक कारकों की पहचान की जा सके। तथा उन उपायों की समझ विकसित की जा सके जो उनकी क्रियात्मक दक्षता को प्रभावित करते हैं। एवं कार्यात्मक उपयोगिता को शक्ति प्रदान करते हैं। इसमें नौकरशाही के विकास तथा विकास की प्रक्रिया में इसके उल्लेखनीय योगदान को समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही विकासात्मक नौकरशाही के अध्ययन को भी ध्यान में रखा गया है।

इकाई I : **लोक प्रशासन** – परिभाषा, अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र

अध्ययन के उपागम,

निजी प्रशासन व लोक प्रशासन में समानता एवं अंतर,

नवीन लोक प्रशासन की अवधारणा

इकाई II : **संगठन के सिद्धांत** –

पदसोपान, नियंत्रण का क्षेत्र, आदेश की एकता,

समन्वय,

केन्द्रीयकरण विकेन्द्रीयकरण,

मुख्य कार्यपालिका – सूत्र एवं स्टाफ अभिकरण नेतृत्व,

संसदीय व न्यायिक नियंत्रण

इकाई III : **कार्मिक प्रबंधन** – भर्ती, प्रशिक्षण, पदोन्नति,

नौकरशाही

वित्तीय प्रशासन – बजट के सिद्धांत व बजट निर्माण प्रक्रिया,

भारत में नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक,

प्रदत्त विधायन, लोक संपर्क

प्रशासन में भ्रष्टाचार व सुधार के उपाय

सूचना का अधिकार

इकाई IV: वैज्ञानिक प्रविधि व शोध प्रारूप –

समस्या की पहचान, उपकल्पना

चर एवं संप्रत्यय

वर्णनात्मक, अन्वेषणात्मक, व्याख्यात्मक और

प्रयोगवादी (व्यवहारिक) शोध प्रारूप

इकाई V: सामग्री संकलन, प्रतिचयन और सामग्री संसाधन –

सामग्री संकलन की विधि –

ग्रंथालय, अवलोकन, सर्वे

प्रश्नावली, अनुसूची और साक्षात्कार

व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति और समूह अध्ययन पद्धति प्रतिचयन

सामग्री संसाधन – अंर्तवस्तु विश्लेषण

प्रतिवेदन लेखन और शोध लेखन

संदर्भ ग्रंथ –

- Pfittner J.M. - Public Administration
- White L.D. - Introduction to the Principles
- Awasthi & Maheshwari - Public Administration
- सी.पी. भाम्भरी – लोक प्रशासन के सिद्धांत
- अवस्थी एवं माहेश्वरी – लोक प्रशासन के सिद्धांत
- डॉ. डी. एस. यादव – लोक प्रशासन
- खान एवं वर्मा – प्रशासनिक विचारधाराएँ, भाग 1, 2
- निशा वशिष्ठ – भारत में नौकरशाही की कार्यप्रणाली
- डॉ.बी. एल. फड़िया – लोक प्रशासन
- श्यामलाल वर्मा – राजनीति विज्ञान में अनुसंधान प्रविधि
- त्रिवेदी आर.ए. एवं शुक्ला डी.पी. – रिसर्च मेथडोलॉजी कॉलेज बुक डिपो रायपुर
- रविन्द्रनाथ मुखर्जी – शोध एवं सांख्यिकी
- सी.पी. शर्मा – शोध प्रविधियाँ
- डॉ. बी.एल. फड़िया – शोध प्रविधियाँ
- डॉ. एस. डी. सिंह – सामाजिक शोध सर्वेक्षण एवं सांख्यिकी
- J.B. Johnson, and R.A. Josiym, Political Science Research Methods. Washington D.C.C.Q. Press, 1986.
- M.Waber, the Methodology of Social Science, Translated edited by E.A. Shills and H.A. Finch. Newyork, The Free Press, 1949.
- Dr. A.P. Verma – Research Methodology in Public Administration Non profit organisation.

M.A. Final

Paper – I

Public Administration and Research Methodology

Course Rationale:

Public Administration:

This paper intends to study Public Administration in its larger systematic milieu to identify key interacting factors in its apparatus and actors, and to develop understanding of measures that affect its operating efficiency and strengthen its functional utility. It covers the study of the development of bureaucracy and its significant contributions to the process of development, highlight any and the importance and imperatives of the study of development bureaucracy.

Unit - I: **Public Administration :** Definition, meaning and mutual scope, study approaches, Differences and similarities with Private Administration concepts of New Public Administration.

Unit – II: **Theories of Organisation :** Hierarchy, Span of Control,
Unity of Command, Coordination,
Centralization and decentralization.
Chief Executive: Line and Staff Agencies
Judicial Control over Administration.
Parliament and Judicial

Unit – III: **Personal Management:** Recruitment Training, Promotion,
Bureaucracy
Financial Management: Theories and process of Budget making,
Controller and Auditor General of India,
Delegated legislation, public relation
corruption in Administration and Remedies,
Right to Information

Unit – IV: **Scientific method and Research Design:**
Problem formulation, Hypothesis
Variables, concepts

Descriptive, Exploratory, Explanatory and experimental research Design

Unit – V: Data Collection, Sampling and Data Processing:

Method of Data Collection: Library, observation survey, Questionnaire, Schedule and Interview, Case Study and Pannel Study

Sampling

Data Processing – content analysis

Report writing and Thesis writing

Reference Book:

- Pfittner J.M. = Public Administration
- White L.D. – Introduction to the Principles
- Maheshwari S.R. – Indian Administration system
- Awasthi & Maheshwari – Public Administration
- सी.पी. भाम्भरी – लोक प्रशासन के सिद्धांत
- अवस्थी एवं माहेश्वरी – लोक प्रशासन के सिद्धांत
- डॉ. डी.एस. यादव – लोक प्रशासन
- खान एवं वर्मा – प्रशासनिक विचारधाराएँ, भाग 1,2
- निशा वशिष्ठ – भारत में नौकरशाही की कार्यप्रणाली
- डॉ. बी.एल. फड़िया – लोक प्रशासन
- श्यामलाल वर्मा – राजनीति विज्ञान में अनुसंधान प्रविधि
- त्रिवेदी आर.ए. एवं शुक्ला डी.पी. – रिसर्च मेथडोलॉजी कॉलेज बुक डिपो रायपुर
- रविन्द्रनाथ मुखर्जी – शोध एवं सांख्यिकी
- सी.पी. शर्मा – शोध प्रविधियाँ
- डी. बी.एल. फड़िया – शोध प्रविधियाँ
- डॉ. एस.डी. सिंह – सामाजिक शोध सर्वेक्षण एवं सांख्यिकी
- J.B. Johnson, and R.A. Josiym, Political Science Research Methods. Washington, D.C.C.Q. Press, 1986.
- M.Waber, the Methodology of Social Science, Translated edited by E.A. Shills and H.A. Finch. Newyork, The Free Press, 1949.
- Dr. A.P. Verma – Research Methodology in Public Administration Non profit organisation.

एम. ए. अंतिम
वार्षिक, पेपर – II
भारतीय विदेश नीति के सिद्धांत व व्यवहार

पाठ्यक्रम औचित्य –

भारतीय विदेश नीति –

भारतीय विदेश नीति एक संप्रभु लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में भारत का दर्शन, उसकी स्वछवि और वैश्विक नीतियों में उसके द्वारा स्वयं के लिये अपनाई गयी भूमिका को प्रतिबिम्बित करती है। इस प्रश्न पत्र का केन्द्र उन दबाव विवशता और परिस्थितयों की भूमिका का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य है। जिसने पिछले पाँच दशकों में देश की विदेश नीति को वस्तुतः निर्मित किया है और इसी आधार पर भविष्य की आकृति का निरूपण करता है। यह समकालीन चुनौतियों यथा वैश्वीकरण, उदारीकरण सीमापार आंतकवाद, मानव अधिकार, पर्यावरणीय एवं लैंगिक संबंधी इत्यादि और इन मुद्दों के संबंध में भारत के परिस्थिति जन्म कदम पर भी विशेष रूप से या ध्यान केन्द्रित कतरा है।

इकाई I : **विदेशनीति** – अर्थ, विदेशनीति के अध्ययन के प्रमुख उपागम
भारतीय विदेश नीति के सिद्धांत और उद्देश्य

इकाई II : **घरेलू निर्धारक तत्व** – भूगोल, इतिहास एवं संस्कृति समाज एवं राजनीतिक व्यवस्था,
बाहय निर्धारक तत्व – वैश्विक एवं द्विपक्षीय एवं क्षेत्रीय

इकाई III : **भारतीय विदेश नीति** – निरंतरता एवं परिवर्तन – विशेषकर निम्न के संदर्भ में – अमेरिका, चीन, रूस

इकाई IV : **पड़ोसी देशों** के प्रति – भारत की नीति,
पाकिस्तान, चीन, नेपाल,
श्रीलंका, सार्क व भारत

इकाई V : **विदेश आर्थिक नीति** – निर्धारक तत्व, विदेशी आर्थिक सहायता
अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठनों की भूमिका,
प्रमुख वैश्विक मुद्दों के प्रति भारत का दृष्टिकोण : वैश्वीकरण,
भारत की परमाणु नीति 1968 के बाद, सीमापार आतंकवाद

संदर्भ ग्रंथ –

- भारत की विदेश नीति – रामदेव भारद्वाज
- भारत की विदेश नीति – बी.एल. फड़िया
- भारत की विदेश नीति सिद्धांत और व्यवहार – प्रभूदत्त शर्मा
- Appadoral, Domestic Roots of India's Foreign Policy, New Delhi, Oxford University Press, 1981
- Appadoral, National Interest and Non-Alignment, New Delhi, Oxford Kallnga Publications, 1999.
- R.B. Babu, Golbalization and South Asian States, New Delhi, South Asian PUblishers, 1998
- J. Bandhopadhyaya, The making of India's Foreign Policy, Calcutta Allied 1979
- R. Bradrock, India's Policty since 1971, London, Royal Institute for International Affairs, 1990
- S.P. Cohen and R.L. Park, India : Emergent Power? New York Crane Russak and Co. 1978.
- Indias foreign policy in changing world - V.P. Dutt, Vikas Publishing House

M.A. Final

Annual
Paper – II
Indian Foreign Policy: Theory & Practice

Course Rationale
Indian Foreign Policy:

India's Foreign Policy: India's Foreign Policy reflects the philosophy of India as Sovergin democratic and the self image and role she conceives for herself in the global policies. The focus of this paper is the theoretical perspective of the role of compulsion. Constraints and Conotics, which actually has framed the country foreign policy for the past five decades and on this basis considers the projection for the future. It also specifically focuses on the challenges of the contemporary times such as globalization, liberalization, cross border terrorism, human rights, environmental and gender concerns and the like and India's Stance pertaining there issues.

Unit – I : Foreign Policy:
Meaning and major approaches to the study foreign policy,
Principles and objective of India's from policy.

Unit – II : Deteminants of India's Foreign Policy –
Domestic Determinates – Geography, History, Cultural Society and Political System,
External Determinates: Global, Regional, Bilateral

Unit – III : Continuity and changes in Indias foreign Policy with Special Reference – America, China and Russia.

Unit – IV : Indian Foreign Policy towards her neighbours –
Pakistan, Nepal, China,
Srilanka, SAARC and India.

Unit – V : Foreign Economic Policy – Determinants elements, Foreign Economic Add, New Economic oder,
Role of International Economic Organization,
India's Approach to major Global Issue after 1968-Globalization.
India's Nuclear Policy, Cross Border Terrorism.

Reference Book :

- Appadoral, Domestic Roots of India's Foreign Policy, New Delhi, Oxford University Press, 1981
- Appadoral, National Interest and Non-Alignment, New Delhi, Oxford Kallnga Publications, 1999.
- R.B. Babu, Golbalization and South Asian States, New Delhi, South Asian PUblishers, 1998
- J. Bandhopadhyaya, The making of India's Foreign Policy, Calcutta Allied 1979
- R. Bradrock, India's Policty since 1971, London, Royal Institute for International Affairs, 1990
- S.P. Cohen and R.L. Park, India : Emergent Power? New York Crane Russak and Co. 1978.
- V.P. Dutt, Indias foreign policy in changing world, Vikas Publishing House
- N.Jately, India's Foreign Policy : Challenges and Prospectus, New Delhi, Janaku Prakaashan, 1985.
- भारत की विदेश नीति – डॉ. रामदेव भारद्वाज
- भारत की विदेश नीति – बी.एल. फड़िया
- भारत की विदेश नीति सिद्धांत और व्यवहार – प्रभूदत्त शर्मा
- भारत की विदेश नीति – काशी प्रसाद मिश्रा
- भारतीय विदेश नीति – शील के. अशोपा
- अंतर्राष्ट्रीय संबंध – मथुरा लाल शर्मा

एम. ए. अंतिम
वार्षिक, पेपर – III
अंतर्राष्ट्रीय कानून और मानव अधिकार

पाठ्यक्रम औचित्य –

अंतर्राष्ट्रीय विधि –

अंतर्राष्ट्रीय विधि सामान्यतः ऐसे नियमों के रूप में परिभाषित की जाती है जो राज्यों के एक–दूसरे से आपसी संबंधों के आचरण को विनियमित करते हैं। हयूगो ग्रोसियस के चिंतन से उनका मूल एवं विकास ज्ञात होता है। यह प्रश्न पत्र अंतर्राष्ट्रीय विधि की प्रकृति विषय वस्तु एवं अन्य पहलुओं यथा – मान्यता, क्षेत्राधिकार, दायित्व संधि एवं मानवता के विरूद्ध अपराध आदि से संबंधित विधिक सिद्धांतों का अध्ययन करता है। अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की गतिशीलता और राष्ट्रों के मध्य संबंधों को समझने के लिये अंतर्राष्ट्रीय विधि और राष्ट्र राज्यों के घरेलू क्षेत्राधिकार के मध्य अंतर स्पष्ट करने एवं विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

इकाई I : **अंतर्राष्ट्रीय कानून** – परिभाषा, प्रकृति, स्त्रोत,
ऐतिहासिक विकास – ग्रोशियस का योगदान,
अंतर्राष्ट्रीय विधि व राष्ट्रीय विधि में संबंध

इकाई II : **अंतर्राष्ट्रीय विधि** – संहिताकरण और विकास
अंतर्राष्ट्रीय विधि की सीमाएँ व संभावनाएँ
अंतर्राष्ट्रीय विधिक सिद्धांत – मान्यता, समानता, क्षेत्राधिकार

इकाई III : हस्तक्षेप, तटस्थता, परिवेष्टन, प्रत्यर्पण, आश्रय देने का अधिकार, अंतर्राष्ट्रीय विवादों का समाधान शांतिपूर्ण एवं बाह्यकारी

इकाई IV : **अंतर्राष्ट्रीय कानून के अभिकर्ता** – राजनयिक प्रतिविधि उन्मुक्तियाँ व विशेषाधिकार संधि, हवाई नियम, सम्प्रभुता

इकाई V : **मानव अधिकार** – अर्थ, प्रकृति, विकास,
संयुक्त राष्ट्र चार्टर के प्रावधान,
युद्ध बन्दियों के साथ व्यवहार जेनेवा अभि समय,
आतंकवाद और अंतर्राष्ट्रीय कानून, अंतर्राष्ट्रीय कानून की सीमाएँ एवं संभावनाएँ

संदर्भ ग्रंथ –

- डॉ. बी. एल. फड़िया – अंतर्राष्ट्रीय कानून
- पी. आर. भाटिया – अंतर्राष्ट्रीय कानून
- वेदालंकार – अंतराष्ट्रीय कानून
- C.G. Fanwick, International Law, Oxford Calarendon Press 1939.
- K.Deutsch and S. Hoffman, The relevence of International Law, Oxford Calarendon Press, 1955.
- एम.ए. अंसारी – महिला एवं मानवाधिकार
- अरूण चर्तुर्वेदी, संजय लोढ़ा – भारत में मानवाधिकार
- डॉ. जी.पी. नेमा, डॉ. के.के. शर्मा – मानवाधिकार, सिद्धांत एवं व्यवहार
- अरूण राय – भारत का राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग
- S. Subramanian, Human Rights : International Challenges, Delhi Manas, 1997.
- P. Sieghart, The International Law of Human Rights, Oxford, The Claredon Press, 1983.
- T.Evans, The politics of Human Rights : A global perspective London, Pluto Press, 2001.

M.A. Final
Annual, Paper- III
International Law and Human Rights

Course Rationale
International Law :

International Law is usually defined as rules that goven the conduct of states in their relations with one another. It tracesits origin and development to the contribution of Hugo Grotius. This paper studies the nature content and the different aspects of international law pretaining go to legal principles of recognition, jurisdiction, law of sea deplomatic immunities and privileges, treaty of obligation and crimes against humanity. The distinction between international law and what is trends as domestic jurisdiction of nation states needs to be explained and analyzed in order to understand the dynamics of international system and the relationship between nations.

Unit – I : **International Law :** Definition, Nature and Sources,
Historical Development Grotius Contributions,
Relationship between International and National Law.

Unit-II : **Codification and Progressive development of International Law :** The Limitations and possibilities of International Law,
International Legal Principles - Recognition, Equality, Jurisdiction

Unit-III : **Interference** : Nutrality, Blockade, Extradiction, Peaceful and forceful settlement of International disputes.

Unit-IV : **Agent of International Law :** Diplomatic Representatives - Imunities and priviledges, Teaty,
Laws of Air Warfare Sovergenity.

Unit-V : **Human Rights in provision of UNO Charter:**
Meaning, Nature and Development
Environment Issues and International law Terrorism and International law,
The limitation and possibilities of Intenational Law.

Reference Book :

- डॉ. बी. एल. फड़िया – अंतर्राष्ट्रीय कानून
- पी. आर. भाटिया – अंतर्राष्ट्रीय कानून
- वेदालंकार – अंतराष्ट्रीय कानून
- C.G. Fanwick, International Law, Oxford Calarendon Press 1939.
- K.Deutsch and S. Hoffman, The relevence of International Law, Oxford Calarendon Press, 1955.
- एम.ए. अंसारी – महिला एवं मानवाधिकार
- अरूण चर्तुर्वेदी, संजय लोढ़ा – भारत में मानवाधिकार
- डॉ. जी.पी. नेमा, डॉ. के.के. शर्मा – मानवाधिकार, सिद्धांत एवं व्यवहार
- अरूण राय – भारत का राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग
- S. Subramanian, Human Rights : International Challenges, Delhi Manas, 1997.
- P. Sieghart, The International Law of Human Rights, Oxford, The Claredon Press, 1983.
- T.Evans, The politics of Human Rights : A global perspective London, Pluto Press, 2001.

एम.ए. अंतिम
वार्षिक पेपर – IV
अंतर्राष्ट्रीय संगठन और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं की राजनीति

पाठ्यक्रम औचित्य –

अंतर्राष्ट्रीय संगठन –

यह प्रश्न पत्र अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के उद्‌भव एवं विकास का आंरभ से लेकर वर्तमान समय तक का अध्ययन करता है। यह उन समस्याओं पर प्रकाश डालता है। जो अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के सम्मुख आती है और उनके कार्य में रूकावट डालती है। संयुक्त राष्ट्र की संरचना एवं कार्य विधि का गहराई से अध्ययन किया जाना है कि क्या यह अपने शिल्पियों की अपेक्षा आशा एवं आकांक्षा के अनुरूप खरा उतरा है। साथ ही शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात् राजनीतिक एवं सुरक्षा बिंदुओं से सामाजिक आर्थिक एवं मानवतावादी विषयों में परिवर्तन और इन आवश्यकताओं को सुगम बनाने में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका विश्लेषित किया जाना है।

इकाई I : अंतर्राष्ट्रीय संगठन – प्रवृत्ति एवं विकास, अंतर्राष्ट्रीय संगठन राष्ट्र राज्य का वर्ण संकर,
राष्ट्र संघ – रचना एवं कार्य, विश्व शांति की रक्षा में भूमिका,
राष्ट्र संघ की असफलता के कारण

इकाई II : संयुक्त राष्ट्र – संरचना, उद्‌देश्य एवं कार्य,
संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न अंग,
संयुक्त राष्ट्र की संरचना में सुधारों की आवश्यकता,
भारत और संयुक्त राष्ट्र

इकाई III : अंतर्राष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण एवं बाध्यकारी समाधान –
दबावपूर्ण कार्यवाही,
आर्थिक सामाजिक विकास और संयुक्त राष्ट्र की भूमिका,

इकाई IV : शीत युद्धोत्तर काल में संयुक्त राष्ट्र – सामाजिक, आर्थिक एवं मानवीय भूमिका,

शांति संस्थापक के रूप में संयुक्त राष्ट्र के अंदर की राजनीति

मानवाधिकार – अनुच्छेद और गारंटी

इकाई V : **निःशस्त्रीकरण** – संयुक्त राष्ट्र की भूमिका,

ब्रेटेन वुडस वित्तीय संस्थाएँ–विश्व व्यापार संगठन, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष,

विश्व बैंक, नई विश्व आर्थिक व्यवस्था,

संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका का मूल्यांकन

संदर्भ ग्रंथ –

- बैकुंटनाथ सिंह – अंतर्राष्ट्रीय संगठन ज्ञानदा प्रकाशन
- एम. पी. राय – अंतर्राष्ट्रीय संगठन कॉलेज बुक डिपो जयपुर
- K.P. Saxena, Reforming the United Nations, The Challenging Reverence, New Delhi, SAGE, 1993.
- Archer, International Organization, Newyork, Sent martin Press, 1975.

M.A. Final

Annual, Paper – IV

International Organisation and Politics of International Financial Institution

Course Rationale

International Organization:

This paper studies the evaluation and the development of international organizations from its inception till present times it focuses on the problems that conforms international organizations and constraints within which they function. An in-depth study of the structure and functioning of the United Nations needs to be undertaken and analyzed from the perspective of whether it has lived upto the expectations hope and aspirations of its architects in addition the shift from political and security considerations to social, economic and humanitarian concern following the end of the cold war and UN's role in facilitating these needs to be analyzed.

Unit – I : International organization : Nature and Evolution.

International organization – A Hybrid of Nation State System and the International system,

The League of Nation – structure and functions, Role in protecting world peace, cause of failure of league Nations.

Unit – II : The united Nations : aims, structure and functions,

various organs of U.N., Need of Reform in the U.N. Structure,

India and United Nations,

Unit – III : Peaceful settlement and forceful settlement of International

Diputes and Enforcement Action,

Role of United Nation in Economic and Social development.

Unit – IV : United Nation in post cold war Era, Socio,

economic and Humanitarian Role,

United Nation as a peace keeper and politics within United Nation,

Human Rights Articles and Guarantee,

United Nation Role in Disarmament.

Unit-V : The evolution at International financial Institute :

Bretton woods system, World Trade Organization, International Monitory Fund, World Bank, Now world economic order, Assessment of United Nation role.

Reference Book :

- K.P. Saxena, Reforming the United Nations, The Challenging Reverence, New Delhi, SAGE, 1993.
- Archer, International Organization, Newyork, Sent martin Press, 1975.
- बैकुंटनाथ सिंह – अंतर्राष्ट्रीय संगठन ज्ञानदा प्रकाशन
- एम. पी. राय – अंतर्राष्ट्रीय संगठन कॉलेज बुक डिपो जयपुर